खण्ड : 'ख'

संस्कृत दिग्दर्शिका

प्रथमः पाठः

वन्दना

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव,
यद् भद्रं तन्न आसुव।।१।।

ईशावास्यमिदं सर्वं यत् किञ्च जगत्यां जगत्,
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।।२।।

सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै,
तेजस्वि नावधीतमस्तु, मा विद्विषावहै।।३।।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।।४।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु,
शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।५।।

अभ्यास प्रश्न

➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

१. वन्दनायाः प्रथमे मन्त्रे का प्रार्थना कृता?

२. जगति मानवः कथं वसेत्?

३. वयं कथं जीवनम् यापयेम्?

४. पञ्चमे मन्त्रे का प्रार्थना कृता?

५. अस्मभ्यम् प्रजाभ्यः पशुभ्यः च ईश किम् ददातु?

➡ अनुवादात्मक प्रश्न

१. **निम्नलिखित श्लोकों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–**

(क) विश्वानि..... आसुव।

(ख) ईशावास्यमिदं..... धनम्।

(ग) यतो यतः..... पशुभ्यः।

२. **निम्नलिखित सूक्तिपरक वाक्यों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–**

(क) मा विद्विषावहै।

(ख) विश्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव।

(ग) मा गृधः कस्य स्विद धनम्।

(घ) तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।

(ङ) सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै।

(च) उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत।

(छ) ईशावास्यमिदं सर्वं।

३. **निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**

(क) ईश्वर का सदा ध्यान करना चाहिए।

(ख) किसी के धन का लोभ न करो।

(ग) आलस्य में अपना बहुमूल्य समय न व्यतीत करो।

➡ व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **शन्नः, तन्न में सन्धि-विच्छेद कीजिए।**

२. **निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन बताइए–**

कस्य, विश्वानि, पशुभ्यः।

शब्दार्थ

विश्वानि = सम्पूर्ण। **दुरितानि** = पाप। **परासुव** = दूर कीजिए। **भद्रं** = कल्याणकारी। **आसुव** = प्रदान कीजिए। **ईशावास्यम्** = ईश्वर से व्याप्त है। **तेन** = इस कारण से। **त्यक्तेन** = त्यागपूर्वक। **भुञ्जीथाः** = भोग करो। **मा गृधः** = लोभ या लालच न करो। **कस्य स्वित्** = किसका है। **शन्नः** = शं + नः (**शं** = कल्याण, **नः** = हमारा।)। **प्रजाभ्यः** = प्रजाओं (सन्तान) का। **पशुभ्यः** = पशुओं से।

●●